Appendix - 1

परिशिष्ट - १

भगवंतराय खीची की रचनायें

(पृष्ठ ३०७ - ३१६)

खोज रिपोर्ट सन्१९२३-२५ में भगवंतराय की रचनायें

१

सुबरन गिरि सो सरीर प्रभा सोनित सी
तामें झल झलै रंग बाल दिवाकर को (सरोज)
दनुज सघन बन दहन कृसानु महा
ओज सो विराजमान अवतार हर को
भनै भगवंत पिंग लोचन ललित सोहै
कृपा कोर हेर्यो विरुदैत उचे कर को
पवन को पूत, कवि कुल पुर हूत सदा
समर सपूत बंदों दूत रघुबर को

नैन बरनन

२

? सलि भरे सुखद सनेह भरे सोभियत
जगत उज्यारे प्यारे जानकी के कंता के
? कृपा भरे, त्रपा भरे निपट निकाई भरे
रछा भरे संत रस मंडली के रंता के
भनै भगवंत रीझ खीझ भरे,भारे — ?
रन रोस तेज भरे खरे रथ अंता के
? लछा-लछा विघन जे छन विडारिबे को
बंदों पिंग लोचन जे रछा अछा अंता के

३

कृपा की कटाछा होते कामतरु कामना को,
बढ़त विभूति विधि,विविधि विधान के
? क्रुद्ध के कटाछा होते दुष्ट जरि छार होत,
लंका में अतंक होत दिग्गज दिसान के
भनै भगवंत टंका जिनको लंगूर दीह
प्रभु सों सदाई प्रेम पूरन प्रमान के

जोति के विरोचन दुसह दुख मोचन तै
बंदौ पिंगलोचन हठीले हनुमान के

४

सुजन समाज को प्रगट प्रफुल्लित कै
चूमित मरुत चारु केसरी सुतत है
तारापति परम प्रसन्न रहै जासों सदा
कुमुद सुखेन हरि रिच्छ हितवंत है
भनै भगवंत सीता रामहि भजत नीके
समर सहाई उग्र ओजस अनंत है
मानगढ़ भंजिबे को महा वालधी को बाल
आयो हनुमान जैसे आवत बसंत है।

५

बज्रतन बज्रधर हू को सो सहायक है
बज्रधर जेता को जितैया मजबूत है
सुमन सुमित्रा को जियायो ल्यायो गिरि गोह
सीता को मिटायो सोक अद्भुत दूत है
भनै भगवंत भीति गंजन विभीषन की
कपिकुल राज राज रंजन सपूत है
अज्ञा करि प्रभु को अवज्ञा करि वैरिन को
जनकी प्रतिज्ञा को पलैया पौन पूत है

६

उदधि उलंघन को लंका को जरैया राज
रावन सो लरिगे लरैया महारन को
भनै भगवंत कपि केसरी कुमार तू
उदार एंड़दार सरदार कपि गन को

कैसी भई तोहि तो हठील हनुमान वीर,
पन को पलैया तैं जनैया जन-मन को
भ्राता हरिदासन को, त्राता सरनागत को,
प्रभु-गुन-ज्ञाता प्राण-दाता लछिमन को

७

राम दल वादल को इन्द्रधनु राजै कैधौं
फहरैं फतूह यों निसान बड़े सान कै
कै अपार पारावार, नापिबे को दंड कैधौं
कै अखंड कालदंड घोर घमसान को
जनन पै अनुकूल मदन को मूल भव
सूल हर ललित लैंगूर हनुमान को

८

लहरति ललित धौकलान सो कलित
निदरत सोभा स्वच्छ सुवरन सूत को
चूम्यो पुन मान पुरचन पावन सों प्यार करि
देखे द्रुम मालिका सिहात पुरहूत को ।
भनै भगवंत कहा ओज को जुगति जोति
भान भान कैसी प्रभु पदनेह नूत को

हनुमत पचासा का विषय

छंद १-३ : हनुमान के शरीर का वर्णन, नेत्रों का वर्णन और उनका प्रभाव, तेज आदि का कथन ।

छंद ४-७ : नजर जीभ, दांत और ठोढ़ी का वर्णन ।

छंद ८-१२: छाती वाहु पंजा और नख का वर्णन ।

छंद १३-१६: कंधा लांगूल का प्रभाव व तीक्ष्णता, वंदी छोर विरद वर्णन, पैज व दीन रक्षण कथन ।

छंद १७-२४ सिंधु, लंघन के छंद, सिंधु से भेंट, लंकिनी से भेंट, व मुष्टिका मारना ।

छंद २५-३१ : तक लंकपुर प्रवेश, दशकंठ के महल में जाना, विभीषण से भेंट व सीता का पता लगाना, सीता से भेंट का विचार का वर्णन, अंगुली की अंगूठी देना ।

छंद ३२-४१: सीता की आज्ञा से फल फूल खाना, रादासौं का रोकना व युद्ध का होना, रादासौं का मारना, क्रोध वर्णन । हनुमान का पकड़ा जाना । अदावध, रावण संवाद लंका दहन, लंका में आतंक तथा रुदनादि वर्णन ।

छंद ४२-५० : इन्द्रजीत के दल को देख कर हनुमान का झपटना लंका दहन कथन, हनुमान का वापस आना । सबका प्रसन्न होना , हनुमान की प्रशंसा ।

नोट: यह ग्रन्थ खोज में नया मिला है । मिश्रबंधु विनोद में हनुमान पचासा का उल्लेख है परन्तु इसमें ५० से अधिक छंद हैं ।

(मिश्र बंधु विनोद में)

सुख भरि पूरि कटै, दुखन को दूरि करै,
जीवन समूरि सो सजीवन सुधार की
चिंताहरिवे को चिंता मनि सो विराजै
कामना को कामधेनु सुधा संजुत सुमार की
मनै भगवंत सूधी होत जेहि ओर देत
साहिवी समृद्धि देखि परत उदार की
जन मन रंजनी है, गंजनी विथा की
भय भंजनी नजरि अंजनी के एड़दार की

विदित विसाल ढाल भालु कपि गन है
ओट सुरपाल की है तेज के तुमार की
जाहि सों चपेटि के गिराये गिरि गढ़ जासों
कठिन कपाट तोरे लंकिनी सुमार की

मनै भगवंत जासों लागि लागि भेंटे प्रभु
जाके त्रास लखन को छुभिता कुमार की
ओढ़े ब्रह्म अस्त्र की अवाती महाताती बंदौ
युद्ध मदमाती छाती पवन कुमार की ।

लखनऊ के कवि द्विज विमलेश जी के संग्रह मैं प्राप्त

सुंदर काण्ड
(लंकादहन) भगवंत कवि

११
झूलनै झूलत झूले छोड़ि भागि चलीं
गोदन के डारि दीन्हे गरभ ससंक मैं
कढ़ परछारे रोवती हैं पिछवारे
अग्निदाह की सुपरि जाय परै नीरि पंक मैं
भवै भगवंत हनुमंत कोपवंत भागी
भयतन माह ढुकी रावन के अंक मैं
मचो खलबल्ला आग लागी है दहल्ला
एकै बचो है विभीषण महल्ला एक लंक मैं

१२
जरी जातुधानी राजधानी जोरा जीम जरी
जरी जगजीत की पतका जो प्रबंध की
जरीजर जरी साज जरत जलूसन की
जरत जराय जरी लंक दस कंध की
जरी बलरास बुद्धि रास छल रास जरी
वीर उन्मत्तता दसानन मदंध की
पौन के सपूत ही की नैक ना जरी है पूंछ
लंक के जरे ते जरी मूंछ दस कंध की

१३
प्यारो राम चन्द जू को दूत अनियारो वीर

जासो बल बाजी लागी प्रभु के प्रमान की
भनै भगवंत लागी रावनै उदासी लागी,
देवन सुघासी होत हांक हनुमान की
बढ़ि के अकास लागी पूंछ, मैं न आंच लागी
आगि लागी देख भागी भीर जातुधान की
मय सुतै संकलागी दौरि पति अंक लागी
लंक लागी जरन जुड़ान लागी जानकी

१४
मेरु लागे हलन सुमेरु नखशिख हलो
मही लागी डुलन थको है रथ भान को
फरकी कमठ-पठि करकी बराह डाढ़ैं
सेस के सहस्स फन अकह कहान को
डिगे दिग पाल बसु लोक लोक लोकन के
भनै भगवंत वल टूटो असुरन को
संको कुंभकरन उदंको हियो रावन को
लंक हहलानी डंका सुने हनुमान को

१५
येही पौन पूत मजबूत रजपूत येही
अदा को निहंता के निहंता जातुधानु को
भनै भगवंत याहि समर जितैगो कौन
गारो है गरब इन्द्रजीत से महान को
भागो भागो भागो मनुजाद कहैं आयो आयो
आयो कपि वीर रामचन्द्र से महान को
मचो खल मल्ला हली लंक ज्यों वहल्ला, [redacted]
होत रावण महल्ला पर हल्ला हनुमान को

१६
समर सपूत मजबूत अंजनी के पूत
सदा रजपूत पुरहूत के समान को

वरिवर वंका निरशंका है तमंका मांझ
लंका मान शंका गयो गरब दिसान को
भनै भगवंत सब राछास कहं हैं अब, ~~छिपोयी~~ है
आयो है निहंता कपि आ से दिमान को
महि से उछल्ला वीर सब दल मल्ला
आज रावण मुहल्ला पर हल्ला हनुमान को

भगवंतराय की प्रकीर्ण रचनायें

गजेन्द्रमोक्ष

गाढ़ परै गैयर गुहारिबौं[1] विचार्यो जब
जान्यो दीन बंधु कहूं दीन कोऊ दलि गो
जैसे हुते तैसे उठि धाए करुना के सिन्धु
अस्त्र सस्त्र वाहन बिसारि कै विमलिगो ?
भनै भगवंत पीछे पीछे पच्छिराज धाए
आगे प्रति पच्छि छेदि आयुधै उछलिगो
जौलौं चक्र धारी चक्र चाह्यो है चलाइबे को
तौलों ग्राह ग्रीव पै आगा चक्र चलिगो
(शिवसिंह सरोज)

सूर्य की स्तुति
(ध्रुपद पद्दा छंद)

जयति जय बलि सूर[2] सूरज जयतिजय दिवाकर तेज महिमा करन
तेज महिमा अमित अमित नक्षत्र दल बल सबल देखि तम हटक फट पल सकल
सरन| है राय भगवंत बलवंत तूं राज विधा महाशक्ति सौरभ भरन ।।
(भरतजी व्यास से प्राप्त)१

१- उनके पास कुछ और ध्रुपद हैं पर उन्होंने उन्हें लिखाने से इन्कार किया ।

चलु री सयानी तू सिरानी सवलाज जात
मानी वात तेरी नैक राति सर सान दै
नूपुर उतारि छोरिकिंकिनी धरन दीजै
नैन मैं नींद नारि नर के समान दै
तू तौ धरु धरि तौलौं मैं तो सजौं चीरि
जौलौं भारी भगवंत जू को चित्तललचान दै
छपा को छपाय दपि जान दे छपाकर को
आऊंगी कन्हैया पै जुन्हैया नैक जान दै
(शिवसिंह सरोज)

४

बदरान होहिं दल आए मैन भूपति के
बुंदिया न होहिं एरी बान झरलाई है
दादुर न होहिं ए नकीब चहुं ओर बोलैं
मोर ए न होहिं हांक सूरन सुनाई है
बकुला न होहिं सैतधुजा भगवंत सिंह
चपला न होहिं समसेरैं चमकाई हैं
वालम बिदेस यौत विरहिन मारिबे कौ
जुगनू न होहिं काम अगिनि जगाई है।
(अलंकार रत्नाकर तथा दिग्विजयभूषण)

५

रैन की उनींदी राधे सोवति सवारो भए,
झीनो पट तानि रही पायनते मुखतें
सीसतें उलटि बैनी माल ह्वै कै उर ह्वै कै
जानु ह्वै कै छबिन सौं लागि सूधे रुखतें
सुरति समर रति यौवन के महा जोर,
जीति भगवंत अरसाय रही सुखतें

हरि को हराइ मानो मैन मकुरन की
धरी है उतारि जैह चंपे के धनुष तैं
(शृंगार-संग्रह एवं अलंकार-दीपक)

६

पीक ही की लीक उरलीक सी लगी है यह
लाललीक मेरी तुम और रस पागे हौ
आरसी लै देखौ नेक आरसी भयो है कहा
आरसी लगत मुकुरत मेरे आगे हौ
कपटी महाउर, महाउर तें जानियत
पांय परसत जाउ जाके पांय लागे हौ
भोर होते आये भगिवंत मोहिं भोरवन
कौन पतिनी के पतिनी के संग जागे हौ।
दिग्विजय (दिग्विजयभूषण तथा शृंगार संग्रह)

७

नीति का सवैया

कट्टरी ताजिनो बीनना वाजिनो,
भिद्दुके लाजिनो भाजिनो देवा
पूस के मास मैं फूस को तापनो,
भूत को जापनो भांभरी खेवा
हैं भगवंत इते नहिं काम के
राम के नाम को होहिंमें लेवा
साधु को लूटनो धर्म को कूटनो
धूम को घूटनो सूम की सेवा।
(दिग्विजय शृंगार संग्रह एवं सरोज०)